Bio Vet Innovator Magazine
(Fueling The Future of Science…)
Volume 3 (Issue 3) MARCH 2026
OPEN ACCESS World Tuberculosis Day – 24th March Popular Article

मुर्गियों के सामान्य रोग, उनके लक्षण एवं बचाव: आधुनिक जानकारी

डॉ.अरुणिमा सिंह[1*] एवं प्रबुद्ध दुबे[2]

1पीएच.डी. शोधार्थी, पशु विकृति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ-अनुसंधान संस्थान (दुवासु), मथुरा – 281001, उत्तर प्रदेश

2पीएच.डी. शोधार्थी, शोधार्थी, पशु प्रजनन एवं स्त्री रोग विभाग, कॉलेज ऑफ वेटरनरी एवं एनिमल साइंस, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश – 250110

***Corresponding Author:** 001drarunima@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19420539

Received: March 29, 2026
Published: March 31, 2026
© All rights are reserved by **अरुणिमा सिंह**

सारांश:

मुर्गीपालन आज एक महत्वपूर्ण एवं लाभदायक कृषि-उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है, परंतु मुर्गियों में होने वाले संक्रामक रोग किसानों को भारी आर्थिक क्षति पहुँचा सकते हैं। रानीखेत रोग, चेचक तथा कोक्सिडियोसिस जैसे रोग मुर्गियों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं और समय पर पहचान न होने पर उच्च मृत्यु दर का कारण बनते हैं। इन रोगों से बचाव के लिए केवल पारंपरिक जानकारी पर्याप्त नहीं है, बल्कि आधुनिक वैज्ञानिक प्रबंधन, टीकाकरण कार्यक्रम तथा सख्त बायोसिक्योरिटी उपायों का पालन अत्यंत आवश्यक है। इस लेख में मुर्गियों के प्रमुख रोगों के लक्षणों का सरल वर्णन करते हुए उनके आधुनिक रोकथाम उपाय, स्वच्छता प्रबंधन, पृथक्करण तथा वैज्ञानिक टीकाकरण कार्यक्रम की जानकारी प्रस्तुत की गई है। यह लेख किसान भाइयों को रोग की प्रारंभिक पहचान, उचित बचाव तथा आर्थिक हानि से सुरक्षा हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: मुर्गीपालन, रानीखेत रोग (न्यूकैसल), फाउल पॉक्स (चेचक), कोक्सिडियोसिस (खूनी दस्त), टीकाकरण, बायोसिक्योरिटी

परिचय:

मुर्गीपालन भारत सहित विश्व के अनेक देशों में तेजी से विकसित होता हुआ एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित उद्योग है। कम पूंजी में अधिक लाभ, कम स्थान में पालन की सुविधा तथा अंडे और मांस की निरंतर बाजार मांग के कारण किसान बड़ी संख्या में इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आधुनिक नस्लों, संतुलित आहार और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण उत्पादन क्षमता तो बढ़ी है, परंतु इसके साथ-साथ मुर्गियों में संक्रामक रोगों का खतरा भी बढ़ा है।

मुर्गियों में रोग प्रायः तीव्र गति से फैलते हैं और थोड़े समय में पूरे झुंड को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे भारी आर्थिक हानि होती है। अधिकांश छोटे और मध्यम स्तर के मुर्गीपालकों को रोगों की सही पहचान, बचाव के आधुनिक उपायों तथा वैज्ञानिक टीकाकरण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी नहीं होती। परिणामस्वरूप वे पारंपरिक या अधूरी जानकारी के आधार पर उपचार करने का प्रयास करते हैं, जो कई बार प्रभावी सिद्ध नहीं होता।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस लेख में मुगियों के कुछ प्रमुख रोगों का वर्णन नीचे किया जा रहा है जिससे हमारे किसान लाभ उठाकर उनकी पहचान आसानी से कर सकते हैं एवं तत्पश्चात् उनकी रोक थाम की भी व्यवस्था कर सकते है:

रानीखेत:

यह बीमारी एक प्रकार के वायरस के कारण होती है जो सभी उम्र की मुर्गियों में हो सकती है।

- **लक्षण: १.** चूजे सुस्त हो जाते हैं। **२.** वे खाना नहीं खाते हैं। **३.** चूजे एक जगह घर के कोने में एकत्रित हो जाते हैं। **४.** उनको सर्दी-खाँसी रहती है। **५.** साँस लेने में कठिनाई होती है। **६.** बहुत से चूजे बिना कोई लक्षण दिखाये मर जाते हैं। **७.** जो चूजे या मुर्गियाँ बीमारी होने के बावजूद जीवित रहते हैं, उनको हरे रंग का पतला एवं बदबूदार दस्त होता है। **८.** इसके बाद भी जो चूजे जिन्दा रहते हैं, वे सिर को पीछे घुमाकर पीठ के ऊपर या शरीर के नीचे या बगल में किये रहते हैं। **९.** चाल में लंगड़ापन और चक्कर लगना शुरू हो जाता है तथा एक या दोनों पैर लंगड़े हो जाते हैं। **१०.** बड़ी मुर्गियों में इस लक्षण के अलावे पीलापन लिए हरा बदबूदार दस्त होता है। **११.** मरी हुई मुर्गियों को चीड़ने पर उनके प्रोवेंट्रिकुलस तथा गिजार्ड, जो चक्की का काम करता है, के भीतर रक्त के छोटे-छोटे धब्बे रहते हैं।

चेचक:

यह एक संक्रामक वायरल रोग है। यह बीमारी सभी उम्र की मुर्गियों में होती है लेकिन प्रायः चूजे इसके अधिक शिकार होते हैं।

- **लक्षण : १.** चूजों की चोंच, कलगी और लटकन पर दाने/घाव जैसे उभार दिखाई देते हैं। **२.** सिर एवं पैर में भूरे रंग की फुंसियाँ निकल आती हैं। **३.** फुंसियाँ चमड़े से चिपकी रहती है और उनके फोड़ने पर सूखा चमड़ा दिखाई पड़ता है। **४.** मुँह में पीले रंग की पपड़ी पड़ जाती है। **५.** कभी-कभी दोनों आँखों में भी पीली पपड़ी बन जाती है, जिससे आँखें बंद हो सकती हैं।

खूनी दस्त:

चूजों को प्रायः यह बीमारी ६-८ सप्ताह में होती है। यह 'कॉक्सीडिया' नामक कीटाणु से होता है।

- **लक्षण : १.** चूजों के सिर पीले मालूम पड़ते हैं। **२.** भूख नहीं लगती है। **३.** रोएँ बिखरे हुए मालूम पड़ते हैं। **४.** चूजों को खूनी दस्त होता है। **५.** पैखाना के रास्ते के चारों **ओर** के पंखों में खून लगा होता है। **६.** चूजे एक स्थान में, एकन होकर झुकते रहते हैं। **७.** चूजे को चीड़ने पर उसकी आँत या सीक्का (बड़ी आंत की दोनों तरफ बन्द थैली) में खून भरा हुआ पाया जाता है।

बचाव के उपाय :

1. मुर्गीघर में मुर्गियों को रखने के पहले घर की सतह को फिनाइल से धो दें एवं दीवार को चूना से पोत दें।
2. इनका घर हवादार रखें।
3. मुर्गियों के पानी के बर्तन को बीच-बीच में डीटॉल या फिनाइल से धोकर ही इस्तेमाल करें।
4. एक उम्र की मुर्गियों को एक ही साथ रखें।
5. मुर्गीसेवक पहले चूजों और तब बड़ी मुर्गियों को दाना-पानी दें।
6. मरी हुई मुर्गी को जला दें या गढे में गाड़ दें।
7. मुर्गीघर में बाहरी व्यक्ति का प्रवेश न होने दें। जब मुर्गीघर का निरीक्षण आवश्यक हो तो उस परिस्थिति में निरीक्षण करने वाले व्यक्ति के पैर को कीटाणुनाणक दवा से धोने के बाद ही मुर्गीघर में प्रवेश करने दें।
8. अस्वस्थ चूजों या मुर्गियों को स्वस्थ चूजों या मुर्गियों से अलग कर दें।
9. बीमार मुर्गियों की दवा करें या मारकर जला या मिट्टी के नीचे गाड़ दें।
10. चूजों को समय पर निम्न टीकोषधि का प्रयोग प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी से करावें-
    (क) एक दिन के चूजों को मैरेक्स रोग का टीका हैचरी पर दिलवाएँ।
    (ख) पाँच से सात दिन की आयु पर रानीखेत (न्यूकैसल) रोग का जीवित टीका (जैसे LaSota/B1 स्ट्रेन) पीने के पानी या स्प्रे

विधि से दें।

(ग) चौदह से इक्कीस दिन की आयु पर गंबोरो (IBD) का टीका पीने के पानी द्वारा दें।

(घ) तीन से चार सप्ताह की आयु पर रानीखेत (न्यूकैसल) रोग का बूस्टर टीका पीने के पानी या स्प्रे विधि से दें।

(ङ) छः से आठ सप्ताह की आयु पर फाउल पॉक्स (चेचक) का टीका विंग-वेब विधि से लगवाएँ।

→ **सावधानी:** (क) टीका स्वस्थ चूजों में ही दें। (ख) टीकोषधि टीकों को धूप, गर्मी तथा कीटाणुनाशक दवाओं से दूर रखें।

11. खूनी दस्त की बीमारी से बचाव के लिए निम्न दवा का व्यवहार करें:

(क) बिछावन (litter) को सूखा और साफ रखें।

(ख) गीली खाद जमा न होने दें।

(ग) मेडिकेटेड फीड में एंटी-कोक्सिडियल दवाओं (जैसे salinomycin, monensin, diclazuril आदि) का उपयोग।

(घ) आवश्यकता होने पर कोक्सिडियोसिस वैक्सीन।

(ङ) दवा का उपयोग केवल पशुचिकित्सक की सलाह से करें।

द्रष्टव्य:

मुर्गीपालक इस बात का ध्यान रखें कि जिस समय एक दिन का चूजा खरीद रहे हों, उस समय बेचने वाले से यह पता लगा लें कि एक दिन के बच्चे को किसी तरह का टीका लगा है या नहीं।

संदर्भ:

1. **एम.एस.डी. वेटरिनरी मैनुअल (MSD Veterinary Manual)** — पोल्ट्री में न्यूकैसल रोग, फाउल पॉक्स, कोक्सिडियोसिस तथा टीकाकरण संबंधी अध्याय।
2. **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)** — पोल्ट्री उत्पादन एवं रोग प्रबंधन दिशानिर्देश।
3. **केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान (CARI)** — मुर्गीपालन प्रबंधन, टीकाकरण एवं बायोसिक्योरिटी प्रकाशन।
4. **पशुपालन एवं डेयरी विभाग, भारत सरकार** — पोल्ट्री रोग नियंत्रण एवं टीकाकरण पर परामर्श सामग्री।
5. **विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH, पूर्व OIE)** — पोल्ट्री रोगों के अंतरराष्ट्रीय मानक एवं बायोसिक्योरिटी दिशानिर्देश।
6. **पोल्ट्री उत्पादन एवं प्रबंधन — आई.सी.ए.आर. प्रशिक्षण पुस्तिका**